नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर
स्थापित २००५ ई.
7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक..... दिनांक : 09-08-2019

प्रकाशनार्थ

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर के प्रार्थना सभा में **'भारत छोड़ो आन्दोलन एवं काकोरी काण्ड'** की स्मृति में आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए प्राचार्य **डॉ0 प्रदीप कुमार राव** ने कहा कि भारत का स्वतंत्रता संग्राम की घटनाये हमेशा ही युवाओं को प्रेरणा देती रही है। राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रबलिदान हम सबको राष्ट्र के प्रति समर्पण और त्याग के लिए तैयार रहने का संदेश देती है। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने भारत माता के लिए हँसते–हँसते जिस प्रकार से अपने प्राणों का बलिदान किया वह विश्व इतिहास में आज भी स्वर्णीम अक्षरों में अंकित है। भारत छोड़ो आन्दोलन भी उसी क्रम में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का महत्वपूर्ण हिस्सा था। भारत छोड़ो आन्दोलन एवं काकोरी काण्ड की घटना ने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम को निर्णायक दिशा प्रदान की। भारत छोड़ो आन्दोलन का लक्ष्य ब्रिटिश साम्राज्य का समूल नाश करना था। यह एक जन आन्दोलन था जिसमें लाखों आम भारतीय शामिल हुए। सत्रहवीं सदी से भारत में आये अंग्रेज शक्तियो द्वारा दिन–प्रतिदिन होने वाले लूट खसोट एवं अत्याचार से तंग आकर भारतीयों ने अन्ततः 09 अगस्त, 1942 ई0 को 'करो या मरो' का नारा अपनाते हुए अंग्रेज सरकार के विरूद्ध एकजुट होकर बगावत का बिगुल फूंका इस व्यापक आक्रोश को देखकर ब्रिटिश हुकूमत को यह आभास हो गया की भारत में अब ज्यादा दिनों तक शासन सम्भव नहीं है भारत छोड़ो आन्दोलन यद्यपि एक शांतिपूर्ण आग्रहात्मक आन्दोलन था तथापि अंग्रेज सरकार ने इसे बर्बरता पूर्वक दबाने का हर सम्भव प्रयास किया। दस हजार से ज्यादा लोगों ने इस आन्दोलन की वेदी पर अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया। भारत भूमि सदैव उन अमर सपूतों की ऋणी रहेगी जिनके इस प्रयासों के मात्र पाँच वर्ष बाद अन्ततः भारत को 15 अगस्त, 1947 को स्वधीनता प्राप्त हुई। आज ही के दिन 09 अगस्त 1925 ई0 में घटित होने वाली एक और महत्वूपर्ण ऐतिहासिक क्रांतिकारी घटना काकोरी काण्ड का उल्लेख करते हुए प्राचार्य डॉ0 प्रदीप कुमार राव ने कहा कि अशफाक उल्ला खाँ, राम प्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी, ठाकुर रोशन सिंह, सचिन्द्र बख्शी, केशव चक्रवर्ती, बनवारी लाल और मन्मथ लाल गुप्त ने अपनी योजना को अंजाम देते हुए लखनऊ के नजदीक काकोरी में ट्रेन से ले जा रहे सरकारी खजाने को लूटा। काकोरी की घटना को इस दृष्टि सी भी देखने की आवश्यकता है कि क्रान्तिकारियों ने अंग्रेजो का जो खजाना लूटा था वस्तुतः वह भारतीयों के ही खून पसीने की कमाई थी। विश्व में ऐसे बहुत से देश है जहाँ के क्रान्तिकारियों ने अपने संघर्षो को जारी रखने के लिए आतातायी शासन तंत्रो के खजानों को लूटा है। काकोरी घटना इसका जीवन्त प्रमाण है। काकोरी घटना ने भारत में क्रांतिकारी गतिविधियों को तीव्र किया। फलतः भारत के स्वतंत्रता प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त हुआ। इस घटना से क्रांतिकारी ब्रिटिश राज के विरूद्ध क्रान्ति के लिए आवश्यक धन जुटाने में कामयाब रहे। देश में सशस्त्र संघर्ष के माध्यम से स्वतंत्रता दिलाने के प्रयास में क्रांतिकारियों का योगदान वंदनीय है।

इस कार्यक्रम में डॉ0 विजय कुमार चौधरी, डॉ0 शिवकुमार वर्नवाल, डॉ0 अविनाश प्रताप सिंह, श्रीमती कविता मन्ध्यान, डॉ0 वेंकट रमन, श्री सुबोध कुमार मिश्र, डॉ0 प्रज्ञेश मिश्र, डॉ0 राजेश शुक्ल, सुश्री पुष्पा निषाद, श्रीमती विभा सिंह, श्रीमती अनुभा श्रीवास्तव, सुश्री श्वेता चौबे, श्री नन्दन शर्मा सहित महाविद्यालय के समस्त शिक्षक–विद्यार्थी उपस्थित रहे।

(वागीश राज पाण्डेय)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी